

आलस्य और अलबेलेपन से बचें



मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा एवं मूल्यवान खज़ाना समय है। विश्व की सारी संपत्ति लगाकर भी समय का एक क्षण भी खरीदा नहीं जा सकता है। कौन मनुष्य क्या है, उसका जीवन कैसा है? यह इस बात से जाना जा सकता है कि वह अपने समय को किस प्रकार से व्यतीत करता है? समय को व्यर्थ तो नहीं गंवाता है? जिस समय हमें जो करना चाहिए अगर समय को महत्त्व देकर कर लेते हैं, तो जीवन को विशेष महान बना सकते हैं। समय के साथ अन्य खज़ाने भी जुड़े हुए हैं। समय व्यर्थ जाता है तो संकल्प, श्वास और शक्तियाँ भी व्यर्थ चली जाती हैं। समय के तीन पहलू हैं – वर्तमान, भूतकाल (जो बीत चुका) और भविष्य (जो सामने आने वाला है)। तीनों में, हमारे जीवन में महत्त्व वर्तमान का ही है। भूतकाल (जो बीत चुका है) वापिस नहीं लौट सकता इसलिए भूत को भूल जाइये। भूत शब्द तो किसी को भी प्रिय नहीं है। बीती हुई बातों को यदि हम याद करते हैं तो वास्तव में वे भूत का ही कार्य करती

हैं। उनसे मिलता कुछ भी नहीं है बल्कि मनुष्य परेशान होता है और दुखों को निमंत्रण देता है। जो बीत चुका वो वापिस तो लौट नहीं सकता इसलिए उसका चिंतन करना भी व्यर्थ है। चार बातें जीवन में कभी भी लौट नहीं सकती हैं – मुख से निकला हुआ बोल, कमान से निकला हुआ तीर, हाथ से निकला हुआ अवसर और बीता हुआ समय। इसलिए हमारी समझदारी इसी में है कि जो समय, घटनाएँ, कार्य हो चुके हैं, हम उनका चिंतन बार-बार न करें, ऐसा करने से हमारा वर्तमान व्यर्थ चला जाता है। अगर हम भूतकाल से संबंधित बातें सोच रहे हैं तो अवश्य ही वह वर्तमान हमारा भूतकाल की तरह ही बीत रहा है। हम वर्तमान में होते हुए भी भूतकाल में जीते हैं और वर्तमान का फायदा उठाकर, जो हम आगे बढ़ सकते थे, उससे वंचित हो जाते हैं। बीती बातों को बार-बार सोचते हैं तो वह हमारा स्वभाव बन जाता है। अक्सर यह देखा गया है कि व्यक्ति बीती हुई अप्रिय बातों का चिंतन करता है। अतः बीते हुए समय के बारे में सोचना अर्थात् दुःखी होना।

हमें भविष्य की भी चिंता नहीं

होनी चाहिए क्योंकि भविष्य भी तभी अच्छा होगा जब हम वर्तमान को अच्छा करेंगे। भविष्य वर्तमान की ही परछाई है। आज हम बीज बोयेंगे तो कल खायेंगे। सिर्फ इतना सोच लेने मात्र से कि कल मेरा फल बहुत अच्छा हो जाना चाहिए, क्या वह हो जायेगा। जरूर आपको उसके लिए वर्तमान में पुरुषार्थ करना होगा, बीज बोना होगा। इस संसार में जितनी महान विभूतियाँ हुई हैं, उन्होंने सबसे पहले समय को महत्त्व दिया और उसके महत्त्व को समझकर ही अपने जीवन को सफल बनाया। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की प्रथम मुख्य प्रशासिका जगदम्बा सरस्वती की प्रथम धारणा रही कि जीवन की हर घड़ी, अंतिम घड़ी है।

हमको यह समझना चाहिए कि किस समय क्या करना चाहिए। यदि मनुष्य सोने के समय विश्राम न करे, घूमता-फिरता, खाता-पीता, मौज मनाता रहे तो अवश्य ही उसका असर अगली दिनचर्या पर पड़ेगा। आपने बंदर-बंदरी की वह कहानी तो सुनी ही होगी कि शुभ मुहूर्त को पहचान कर बंदरी पेड़ से कूदी तो राजकुमारी बन गई और ज़रा-सी देर कर देने के कारण बंदर, मदारी द्वारा बंदी बना लिया गया। कहानी में यही संदेश छिपा है कि हमें कोई भी अवसर प्राप्त

